मीठे का शौक़ीन
मुचकुंद

माधव गाडगिल
माया रामास्वामी

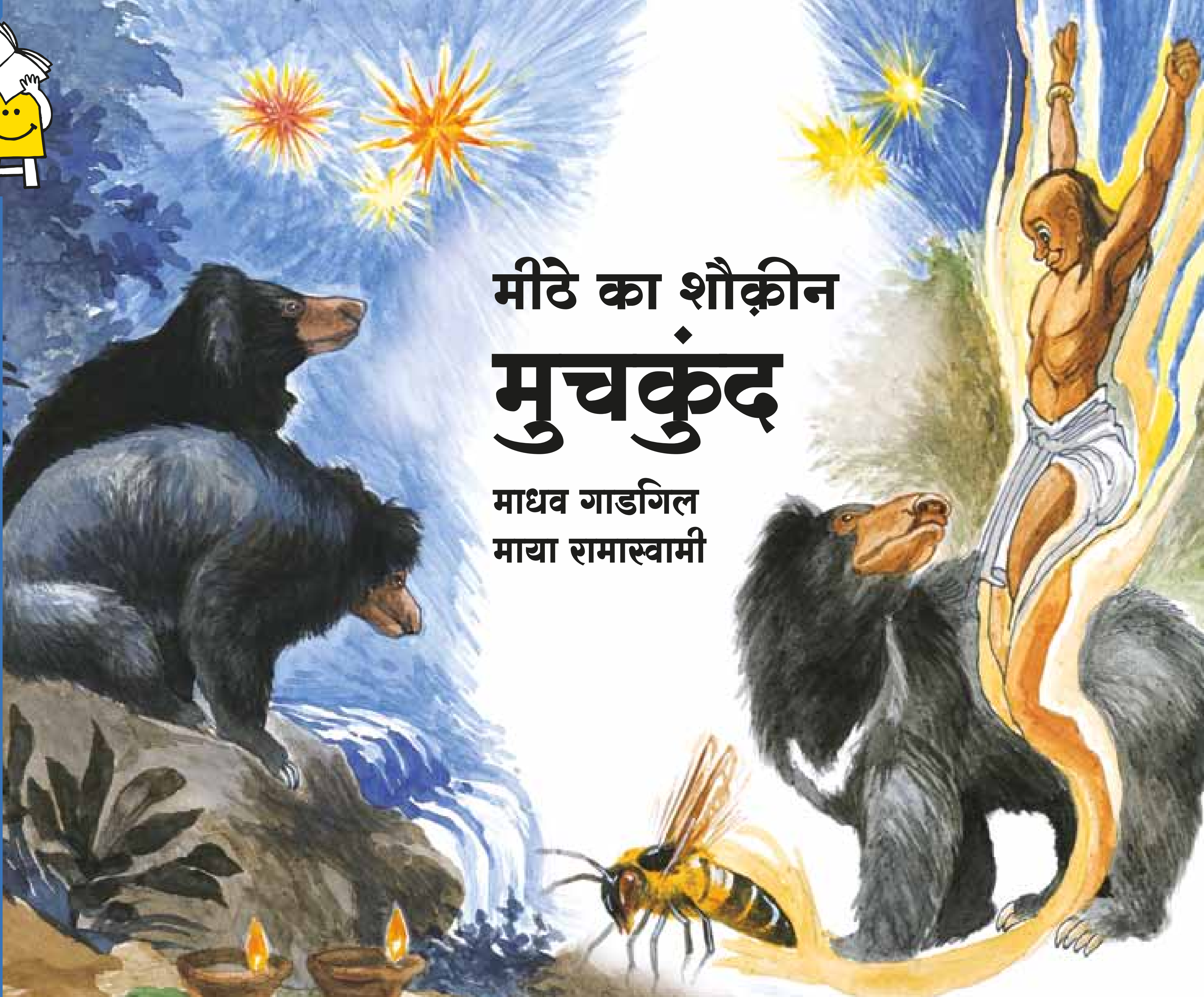

पठन स्तर ४

Original Story in Marathi **'Godtondya Muchkund'** by Madhav Gadgil
© Madhav Gadgil, 2013. Some rights reserved. CC-BY-SA 3.0

'Meethe Ka Shaukeen Muchkund' — Hindi translation by Rajesh Khar
© Pratham Books, 2013. Some rights reserved. CC-BY-SA 3.0

Illustrated by Maya Ramaswamy
© Maya Ramaswamy, 2013. Some rights reserved. CC-BY-SA 3.0

First Hindi Edition: 2013

ISBN: 978-81-8479-413-7

Typsetting and Layout by: Pratham Books, New Delhi

Printed by: Rave India, New Delhi

Published by:
Pratham Books
www.prathambooks.org

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
621, 2nd Floor, 5th Main, OMBR Layout
Banaswadi, Bangalore 560 043
T: +91 80 42052574

Regional Office:
New Delhi
T: +91 11 41042483

The development of this book has been supported by Pani Foundation.

Some rights reserved. The story text and the illustrations are CC-BY-SA 3.0 licensed which means you can download this book, remix illustrations and even make a new story - all for free! To know more about this and the full terms of use and attribution visit **http://prathambooks.org/cc**.

PRATHAM BOOKS

मीठे का शौक़ीन मुचकुंद

लेखनः माधव गाडगिल
चित्रांकनः माया रामास्वामी
हिन्दी अनुवादः राजेश खर

यह कहानी है मुचकुंद की जो कि एक बड़ा ही होनहार जवान भूत है और पुणे के वेताल बाबा भूत परिवार से है। एक मुंज्या भूत होने के कारण वह दल के बाकी भूतों से कहीं अधिक चतुर है और स्वभाव से मददगार भी। वह पुणे विश्वविद्यालय परिसर में एक विशाल पीपल के पेड़ पर रहता है। मुचकुंद अक्सर विश्वविद्यालय की कक्षाओं में एक छात्र के रूप में जा बैठता है। बीच-बीच में वह किसी गौरैया का रूप धर कर प्रयोगशालाओं की खिड़कियों पर बैठ कर भीतर हो रहे प्रयोगों को देखता है। वह सदा ही ज्ञान की खोज में जुटा रहता है।

एक दिन, एक कक्षा में जब प्रोफ़ेसर सुदूर देशों की बातें बतला रहे थे तो मुचकुंद का मन हुआ कि काश वह भी कहीं छुट्टी मनाने जा पाता। इसलिए जब उसे जाम्बवन चाचा का पत्र मिला तो वह बड़ा खुश हुआ।

जाम्बवन चाचा ने लिखा था, ''दीपावली की छुट्टियाँ मनाने यहाँ एड्जर आ जाओ। यहाँ के ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर खूब सारे मधुमक्खियों के छत्ते लटक रहे हैं। तुम्हारे चचेरे भाई नील, अंगद, सुशेन और बाकि सब को पेड़ों पर चढ़ इन छत्तों को तोड़ने और उनमें जमा शहद को खाने में बड़ा आनंद आता है। तुम्हें भी तो मीठा बहुत पसंद है। दो-एक सप्ताह के लिए यहाँ आ जाओ, बड़ा मज़ा आएगा।''

भूतों का दल

भारतीय पारम्परिक पुस्तकों में, वेताल बाबा को भूतों का राजा माना गया है। कहते हैं कि भूत, प्रेत हमारे चारों ओर होते हैं और उनके पास विशेष शक्तियाँ होती हैं। वेताल बाबा पुणे की सबसे ऊँची पहाड़ी पर रहता है। उसके दल में विभिन्न प्रकार के भूत जैसे ***पिशाच, प्रेत, मुंज्या, ज़ोटिंग, खावीस और समंध*** *आदि हैं और ये सब पुराने बरगदों, पीपलों और अन्य पवित्र पेड़ों पर रहते हैं। उन्हें भगवान् शिव के नृत्य प्रदर्शनों में उनके साथ जाना अच्छा लगता है। इनके बारे में कई कहानियाँ प्रचलित हैं जिनमें राजा विक्रमादित्य और वेताल की २५ कहानियाँ बड़ी प्रसिद्ध हैं।*

माना जाता है कि मुंज्या विशेष प्रकार के भूत हैं जो बड़े जिज्ञासु होते हैं। मुंज्या कोई भी रूप और आकार ले सकते हैं और किसी भी प्राणी, यहाँ तक कि मनुष्यों की भाषा में बात भी कर सकते हैं।

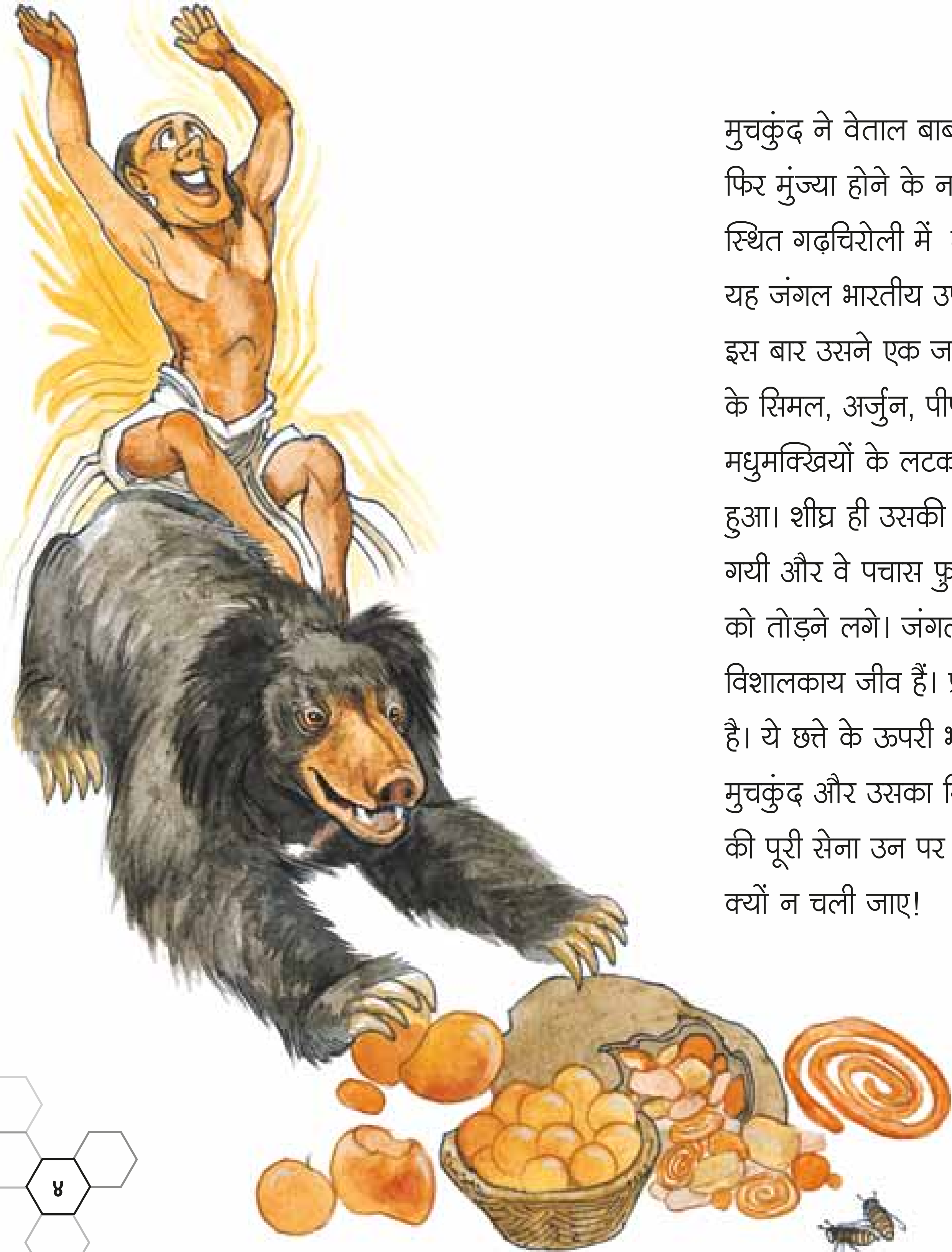

मुचकुंद ने वेताल बाबा से छुट्टी पर जाने की इजाज़त ली। फिर मुंज्या होने के नाते बस एक ही छलाँग में वह महाराष्ट्र स्थित गढ़चिरोली में मेंढा लेखा के एड्जर जंगल पहुँच गया। यह जंगल भारतीय उपमहाद्वीप के ठीक बीचों-बीच स्थित है। इस बार उसने एक जवान भालू का रूप धरा था। घने जंगल के सिमल, अर्जुन, पीपल और कोसिम्ब पेड़ों पर से जंगली मधुमक्खियों के लटकते हुए छत्तों को देख वह बहुत खुश हुआ। शीघ्र ही उसकी नील, अंगद और सुशेन से दोस्ती हो गयी और वे पचास फ़ुट ऊँचे तनों पर चढ़-चढ़ कर छत्तों को तोड़ने लगे। जंगली मधुमक्खियाँ कीटों की दुनिया की विशालकाय जीव हैं। प्रत्येक मक्खी एक इंच से भी लम्बी होती है। ये छत्ते के ऊपरी भागों में मधु एकत्रित करती हैं। जैसे ही मुचकुंद और उसका गिरोह छत्तों के पास पहुँचता, मधुमक्खियों की पूरी सेना उन पर हमला बोल देती, चाहे उनकी जान ही क्यों न चली जाए!

मुचकुंद तो मानो स्वर्ग पहुँच गया था। वह प्रायः मीठे-मीठे शहद के लिए छत्तों पर झपटता और दिन यों ही निकलते गए। फिर एक दिन जी भर के शहद पीने के बाद, उसके मन में एक विचार उठा, 'शहद पीने का आनंद तो ठीक है मगर उन हज़ारों मक्खियों का क्या जिन्हें हमने मार डाला?'

मीठे का आकर्षण

संसार के सभी प्राणियों में मीठे स्वाद का बड़ा महत्त्व है। शक्कर का अणु पेड़-पौधों द्वारा सूर्य के प्रकाश की सहायता से कार्बन डाईऑक्साइड और पानी से निर्मित पहला खाद्य पदार्थ होता है। दूसरे जटिल अणुओं की रचना बाद में होती है। प्राणी शक्कर से तुरंत ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं। इसीलिए खेल के दौरान खिलाड़ी ग्लूकोज़ का प्रयोग तुरंत शक्ति के लिए करते हैं। स्वाभाविक है कि जीव मीठे स्वाद के प्रति बड़े ही आकर्षित रहते हैं। मधु या शहद शक्कर का एक अच्छा प्राकृतिक स्रोत है। आम और कटहल जैसे फलों में भी शक्कर होती है। हमारी जलेबियों और गुलाब जामुनों में भी शक्कर होती है और यह भी आपको अच्छे ही लगते हैं!

'मुझे जाम्बवन चाचा से इस विषय में बात करनी चाहिए,' मुचकुंद ने तय किया। दीपावली की अमावस्या की रात में, नदी के किनारे एक चट्टान पर बैठे बातें करते हुए, मुचकुंद ने जाम्बवन से कहा, ''मैंने देखा है कि शहद छत्तों के केवल एक भाग में जमा होता है। क्या हम छत्ते के शेष भाग को बिना तोड़े नहीं छोड़ सकते?''

जाम्बवन हैरान था। ''मुचकुंद, तुम न जाने क्या-क्या सोचते रहते हो? भालू और मधुमक्खियाँ तो जन्मजात दुश्मन हैं। छत्तों को नष्ट करना तो हमारे स्वभाव में है।''

मुचकुंद ने चाचा की ओर देर तक विनती भरी नज़रों से ताका। कुछ देर बाद एक परेशान करती हुई मक्खी को हटाते हुए जाम्बवन ने धीमे से कहा, ''मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूँ। यह बात सही है कि दिन-ब-दिन शहद कम होता जा रहा है। शायद मधुमक्खियों को बचाने से हमें मदद मिले और साथ ही

शहद की कमी भी दूर हो जाए। परन्तु, हम छत्ते के सिर्फ ऊपरी भाग से शहद कैसे निकालेंगे? यदि हम उस भाग को ध्यान से छुड़ाने लगें तो मधुमक्खियाँ हमारे कान, आँखें और नाक काट खायेंगी!''

''पर चाचा, क्या आप भूल गए कि मैं तो एक मुंज्या हूँ! यदि आप मान जाएँ तो मैं एक नर-मधुमक्खी के रूप में जा कर मधुमक्खियों से बात कर सकता हूँ। देखते हैं कि वे क्या रुख अपनाती हैं,'' मुचकुंद ने कहा।

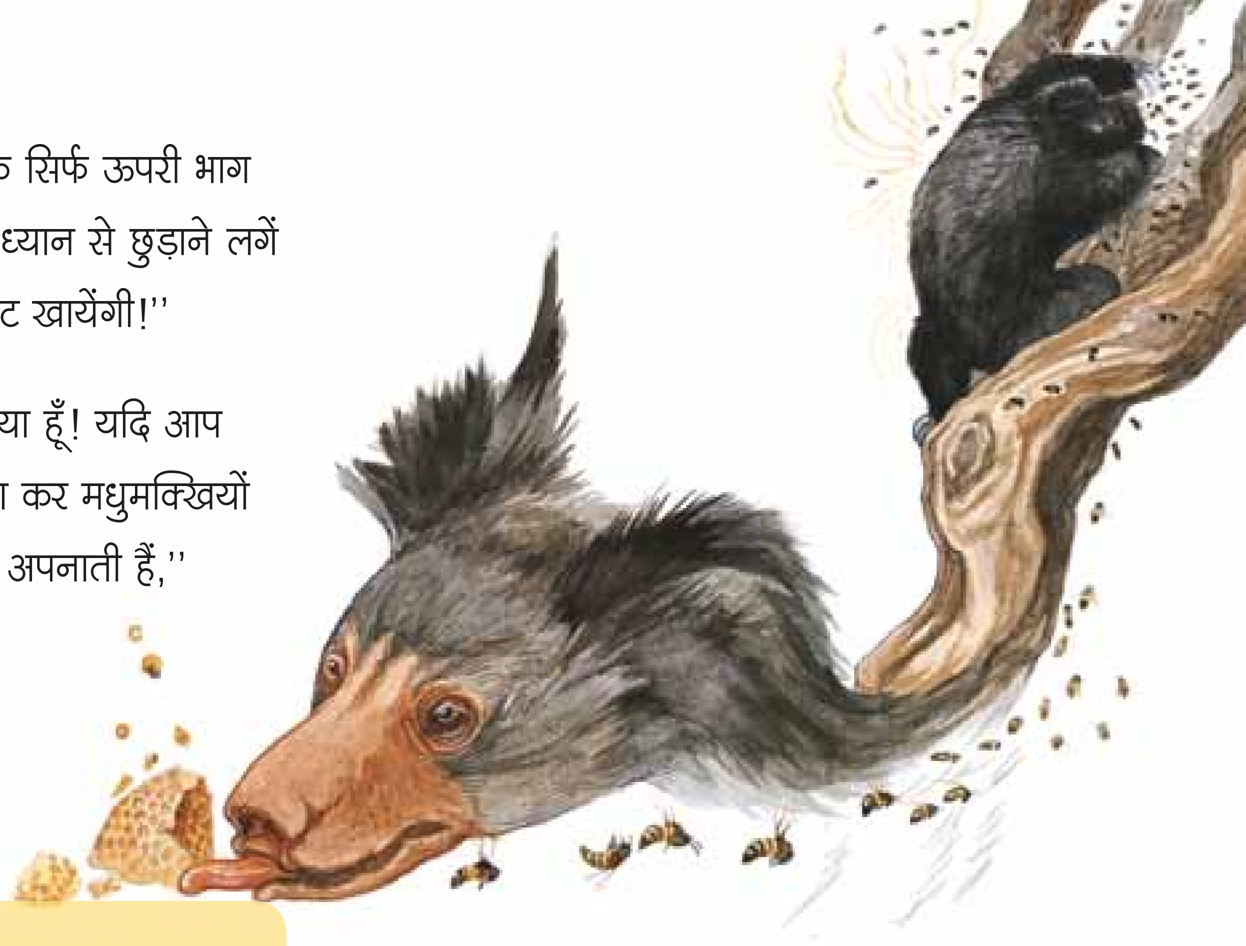

युद्ध में मृत्यु

जब मधुमक्खी किसी को डंक मारती है तो जैसे ही डंक उसकी त्वचा के भीतर पहुँचता है, वैसे ही वह टूट जाता है और मक्खी की अंतड़ियाँ भी उसी के साथ टूट जाती हैं। मक्खी भी मर जाती है। मधुमक्खी का डंक बड़ा ही दर्दनाक होता है, इसलिए कुछ ही जानवर जंगली मधुमक्खियों पर हमला करते हैं। भालू काफी निडर होते हैं क्योंकि डंक उनके घने और लम्बे रोम के पार नहीं पहुँच पाता। पर उन्हें भी कान, आँखों और नाक की रक्षा करनी पड़ती है! जब मधुमक्खियाँ हमला करती हैं, भालू अपनी लम्बी बाहों से अपना मुँह ढक कर बैठ जाते हैं। बहुत सी मक्खियाँ उनके बालों में डंक मारने से मारी जाती हैं। अंत में मधुमक्खियाँ शांत हो जाती हैं। तब भालू जल्दी से छत्तों तक पहुँच कर एक ज़ोरदार वार से उन्हें गिरा देते हैं। फिर वे शहद, मधुमक्खियों के अण्डों, लार्वा और सुंडियों को खा जाते हैं।

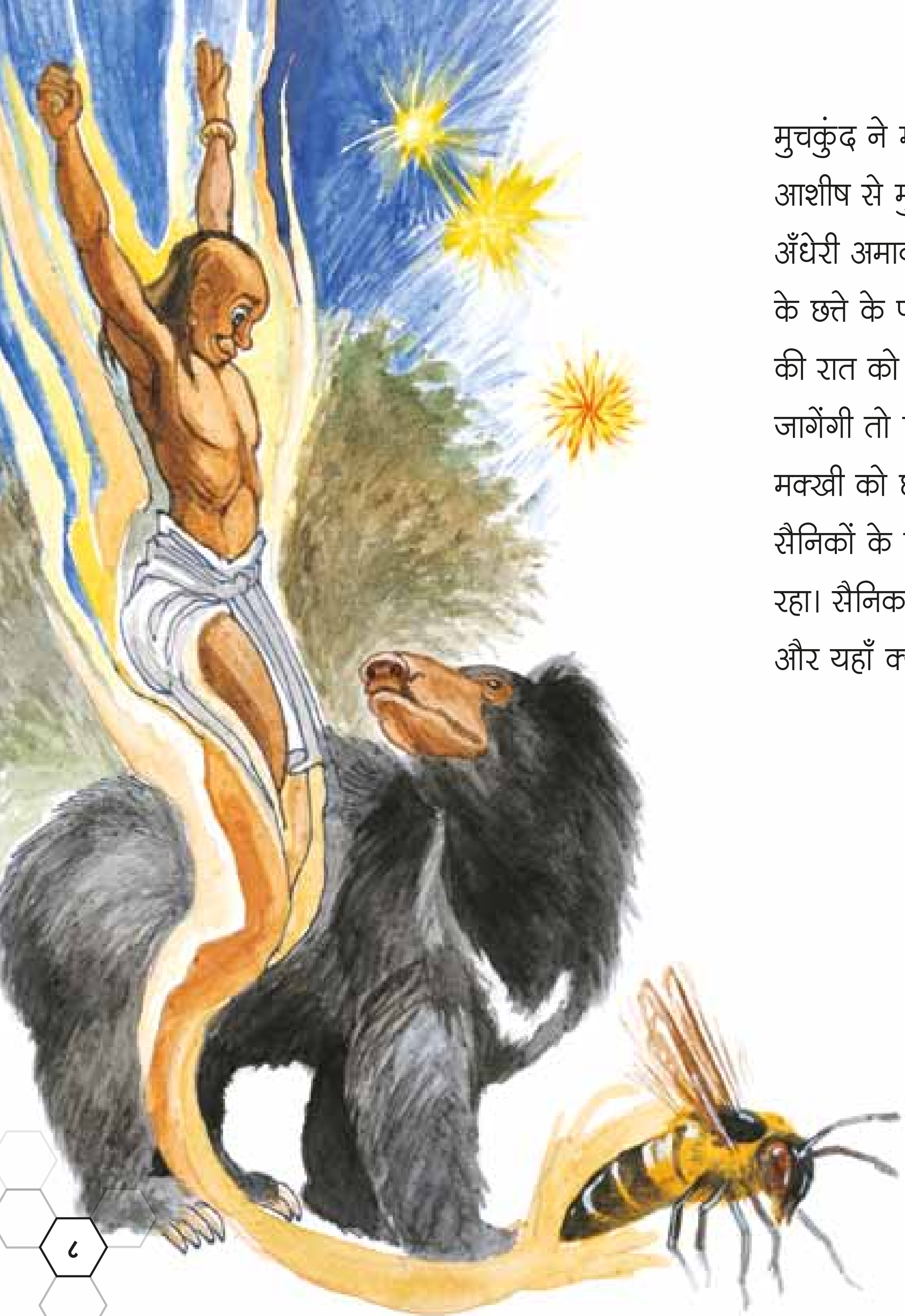

मुचकुंद ने मन ही मन ध्यान लगाया, 'जय वेताल बाबा! अपने आशीष से मुझे एक नर-मधुमक्खी बना दीजिये।' और फिर उस अँधेरी अमावस्या की रात में वह एक बड़े से जंगली मधुमक्खियों के छत्ते के पास उतरा। छत्ते में कोई हलचल नहीं थी। अमावस्या की रात को जंगली मधुमक्खियाँ खूब सोती हैं। सुबह जब वे जागेंगी तो एकदम ताज़ा और चुस्त होंगी। एक अनजान नर-मक्खी को छत्ते के इतनी पास पा कर वे सतर्क हो गयीं। तुरंत सैनिकों के एक दल ने मुचकुंद को आ घेरा। वह चुप-चाप बैठा रहा। सैनिक थोड़े शांत हुए और उससे पूछने लगे, ''तुम हो कौन और यहाँ क्यों आये हो?''

मुचकुंद ने उत्तर दिया, ''मैं शांति दूत हूँ और आपकी महारानी से मिलने आया हूँ। मैं उन्हें मुचकुंद के फूलों के रेणुओं की टोकरी भेंट करना चाहता हूँ। क्या मैं महारानी साहिबा से मिल सकता हूँ?''
अनुमति सहज ही मिल गयी और मुचकुंद ने नाचते-नाचते अपनी बात कहनी शुरू की!

''मधुरानी साहिबा, मैं प्रकृति का प्रेमी और वेताल बाबा का शिष्य हूँ। आप कुदरत की एक अद्भुत रचना हैं और मैं आपका पक्का प्रशंसक हूँ। पर मुझे चिंता है कि मधुमक्खियों की संख्या कम होती जा रही है। हाँलाकि, एक बड़ा कारण बिना सोचे-समझे कीटनाशकों का इस्तेमाल है, परन्तु भालुओं का भी इस विनाश में हाथ है। भालुओं के मुखिया, जाम्बवन ने आपकी स्वीकृति के लिए एक प्रस्ताव भेजा है। मैं आपको सुनाऊँ?''

मधुमक्खियाँ नाचती हैं या गप्पें हाँकती हैं?
मक्खियाँ अपने छत्ते के साथियों से लगातार संचार में रहती हैं। वे फूलों के बारे में और रेणुओं के स्रोत के बारे में हर क्षण एक-दूसरे को सन्देश देती रहती हैं। नाचती मक्खियों के शरीर का कोण भोजन के स्रोत की और इशारा करता है। नाचते हुए उनके पेट जिस गति से हिलते हैं, उससे स्रोत की दूरी और भोजन के प्रकार और उसके स्तर का अंदाज़ा मिलता है!

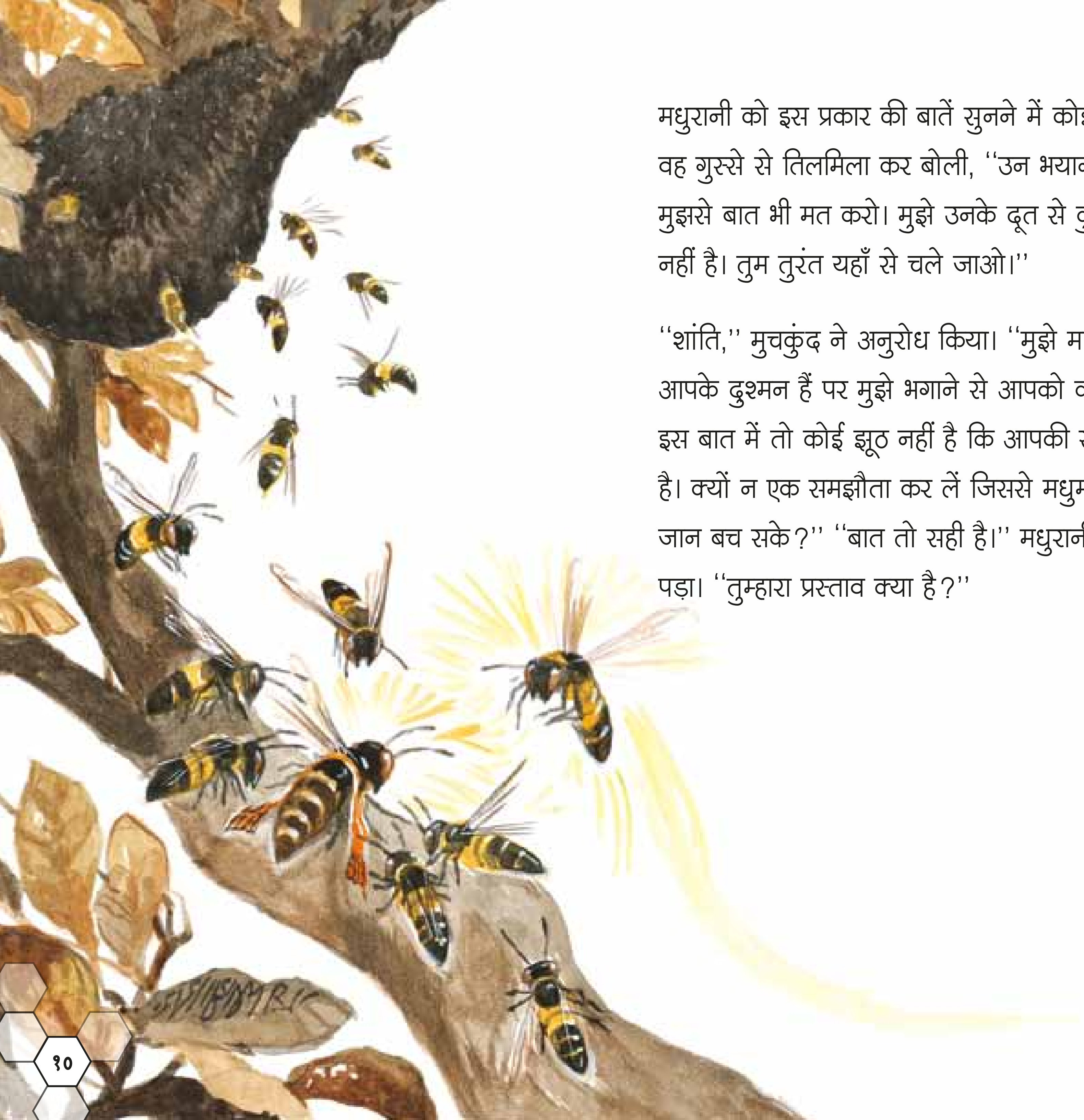

मधुरानी को इस प्रकार की बातें सुनने में कोई रूचि न थी। वह गुस्से से तिलमिला कर बोली, ''उन भयानक जीवों की मुझसे बात भी मत करो। मुझे उनके दूत से कुछ लेना-देना नहीं है। तुम तुरंत यहाँ से चले जाओ।''

''शांति,'' मुचकुंद ने अनुरोध किया। ''मुझे मालूम है कि भालू आपके दुश्मन हैं पर मुझे भगाने से आपको क्या मिलेगा? इस बात में तो कोई झूठ नहीं है कि आपकी संख्या घट रही है। क्यों न एक समझौता कर लें जिससे मधुमक्खियों की जान बच सके?'' ''बात तो सही है।'' मधुरानी को मानना ही पड़ा। ''तुम्हारा प्रस्ताव क्या है?''

''भालू छत्तों की तोड़-फोड़ को कम करना चाहते हैं,'' मुचकुंद ने उत्तर दिया। ''उनका प्रस्ताव यह है कि उन्हें बिना रोक-टोक शहद पीने दिया जाए। वे इसके बदले में अण्डों, लार्वा, सुंडियों आदि को नष्ट नहीं करेंगे। वे पूरे के पूरे छत्तों को नहीं गिराएँगे। वे चाहते हैं कि जब वे शहद पी रहे हों, आप उनके कान, आँख और नाक पर हमला नहीं करेंगे।''

जंगली मधुमक्खियों के छत्ते की बनावट

हज़ारों षटकोणीय मोम के कक्षों या प्रकोष्ठों से बने यह छत्ते भूमि के समानांतर पेड़ की शाखाओं या चट्टानों पर चिपके होते हैं। छत्ते के ऊपरी भाग में दो प्रकार के कोषों में शहद होता है। लगभग दो तिहाई कोषों में कच्चा शहद होता है जिसे मक्खियाँ हर दिन इस्तेमाल करती हैं। ये कोष खुले हुए होते हैं और छत्ते के कुल शहद का केवल एक चौथाई भाग ही इनमें होता है। यह शहद काफ़ी नरम और तरल होता है। दूसरा एक तिहाई शहद गाढ़ा होता है और इसके कोष ढके हुए होते हैं। इसे उन दिनों के लिए सहेज कर रखा जाता है जब बाहर फूलों की संख्या बहुत कम हो जाती है। छत्ते के निचले कोषों में एक ओर रेणुओं का भण्डारण होता है जबकि उनके नीचे कामगार मक्खियों के अंडे और लार्वा होते हैं। फूलों के मौसम में, छत्ते के निचले भाग में रानी के अंडे और लार्वा पाए जाते हैं।

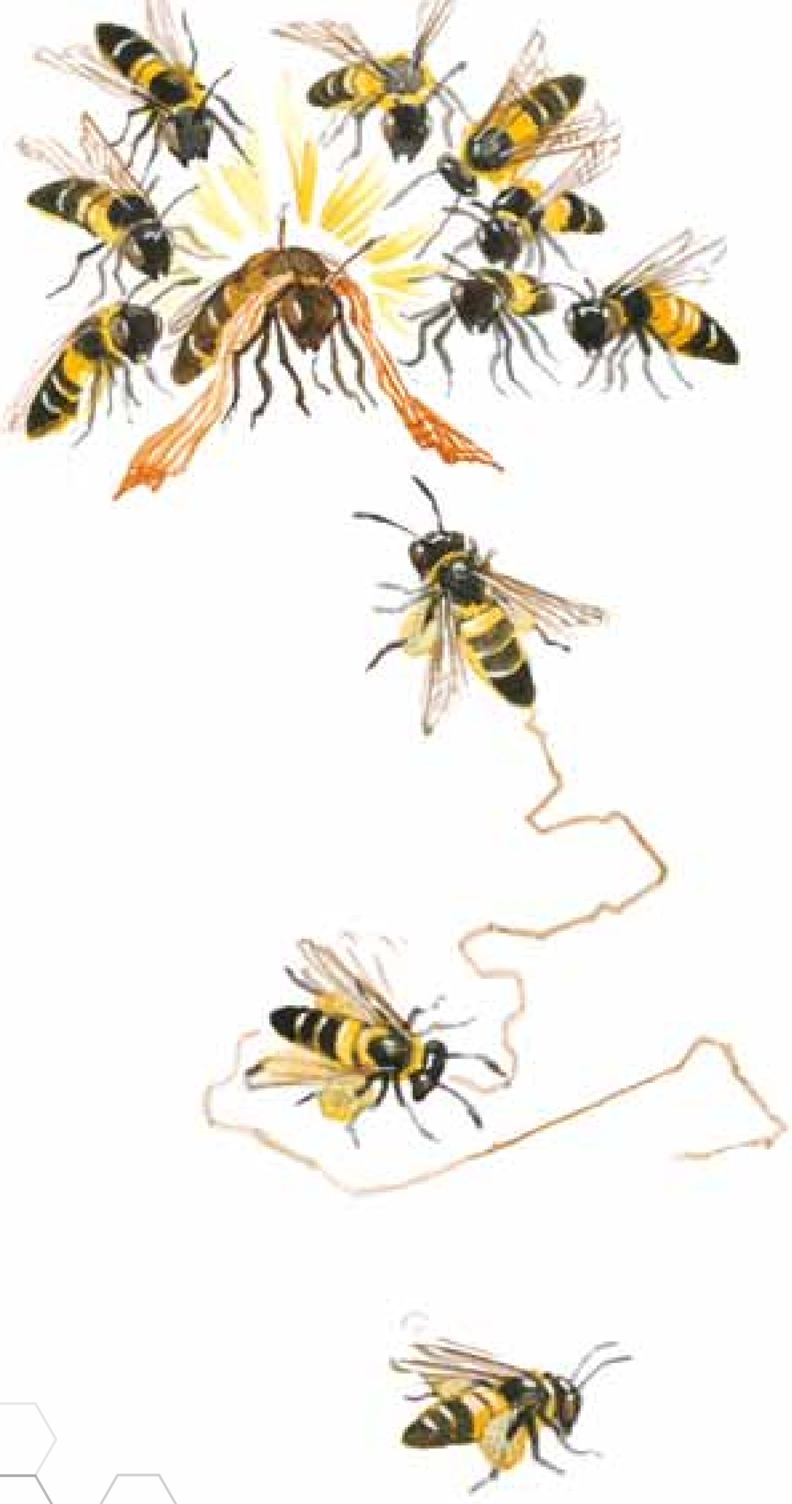

''इस बात पर विचार किया जा सकता है, पर सभी को इस के लिए मनाना आसान नहीं होगा। चलो, फिर भी तुम जाम्बवन से जा कर कहो कि वह हमारा विश्वास न तोड़ें। अगर हम उन्हें शांति से शहद पीने दें तो हमारे अण्डों और लार्वा पर वे कभी हमला न करें।''

मुचकुंद ने मधुरानी को धन्यवाद दिया और कहा, ''बहुत खूब महारानी साहिबा। विश्वास से ही विश्वास बढ़ता है। इसे पनपने का एक अवसर तो देना ही चाहिए। मैं जा कर जाम्बवन को बताता हूँ।'' मधुरानी आश्चर्य से देखती रही जब मुचकुंद नर-मधुमक्खी से एक जवान भालू के रूप में आया और फिर ध्यान से बिना छत्ते को छुए, पेड़ से नीचे उतर गया।

मधुरानी ने एड्जर के सभी जंगली छत्तों को सन्देश भिजवाया। ''एक बहुत ही अविश्वसनीय प्रस्ताव हमारे पास आया है, हमें क्या उत्तर देना है?''

इस बात पर बड़ा वाद-विवाद हुआ। कई रानियों ने इसका विरोध किया। पर अंत में सभी ने इस प्रस्ताव को एक अवसर देने का निर्णय लिया।

उधर भालुओं में भी इस प्रस्ताव पर खूब बहस हुई। ''सिर्फ शहद ही क्यों? हमें तो अंडे और लार्वा का रस भी अच्छा लगता है। और फिर कभी-कभार लगने वाले मधुमक्खी के डंक का भी तो अपना ही एक मज़ा है! कभी किसी भालू की एक आँख तक खराब हो जाती है, पर यह सब तो भालू के जीवन में होता ही है। कैसा होगा चुपचाप छत्ते तक पहुँचना, मधुमक्खियों को सलाम करना और थोड़ा शहद चख कर लौट आना? भालू के लिए तो यह शर्म की बात होगी।''

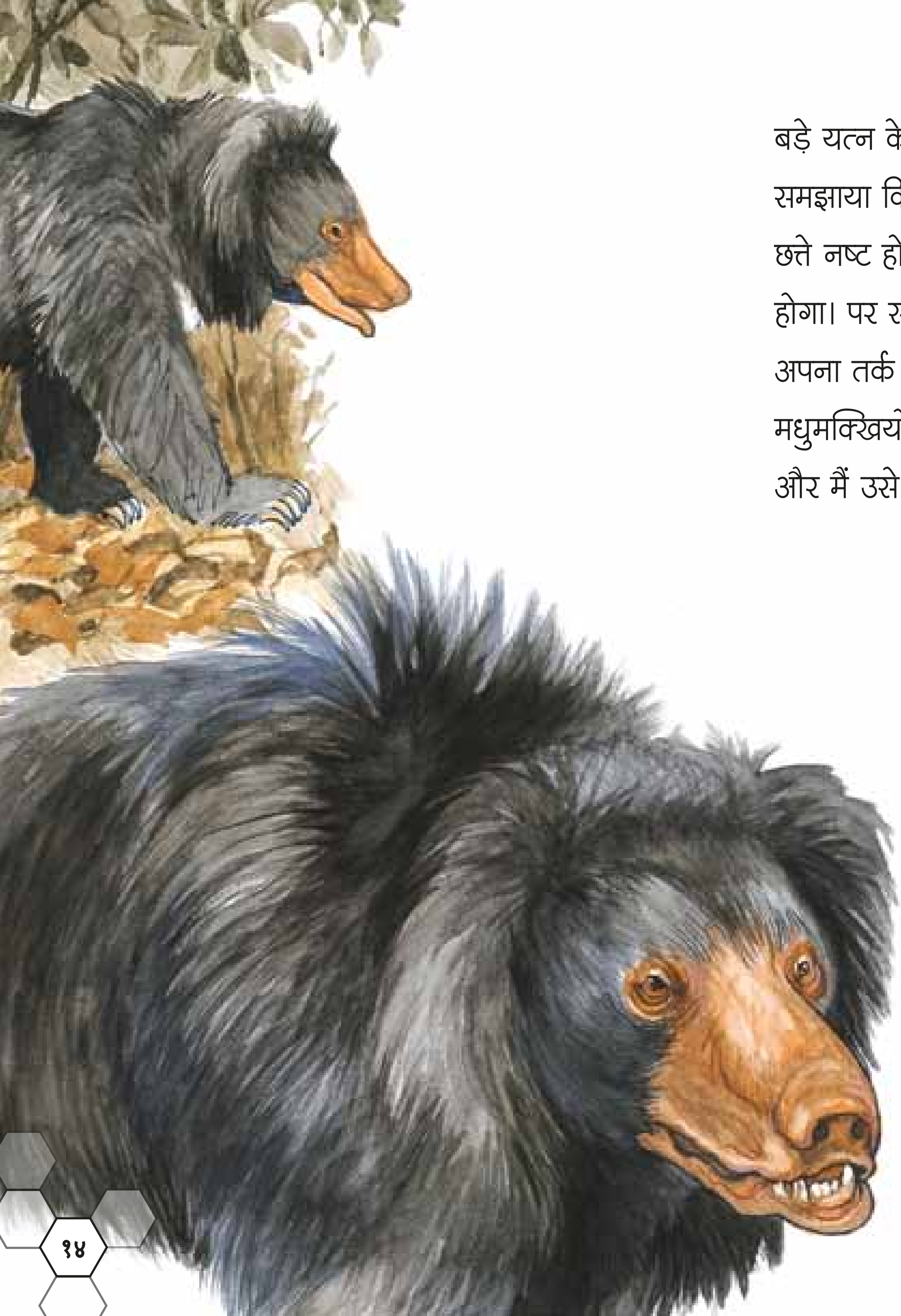

बड़े यत्न के बाद जाम्बवन ने सभी को मना ही लिया। उसने समझाया कि समय बदल चुका है। ऊँचे पेड़ और मधुमक्खियों के छत्ते नष्ट होते जा रहे हैं और इसलिए थोड़ा संयम रखना अच्छा ही होगा। पर सबसे ज़्यादा उधम मचाने वाले भालू, वाली ने अंत तक अपना तर्क जारी रखा और कहा, ''आपको जो अच्छा लगे, कीजिये। मधुमक्खियों के छत्ते पर झपटना एक भालू का स्वाभाविक कार्य है और मैं उसे कभी भी नहीं छोडूँगा।''

जाम्बवन ने उसे समझाने की कोशिश की। ''देखो, मुचकुंद कोई साधारण जीव नहीं है। अगर तुमने न माना तो यह जाकर वेताल बाबा को बतायेगा। वेताल बाबा किसी ज़ोटिंग को तुम्हारे पीछे लगा देंगे। तब तो तुम्हारी खैर नहीं।''

वाली टस से मस नहीं हुआ। ''मैं किसी ज़ोटिंग या खावीस से नहीं डरता। आपको जो करना है, कर लीजिये।''

अब तक सभी वाली के इस रवैये से तंग आ चुके थे। उन्होंने उसे हठ छोड़ कर बात मान लेने को कहा और यह भी कि अगर वह नहीं माना तो बाद में उसे पछताना पड़ेगा।

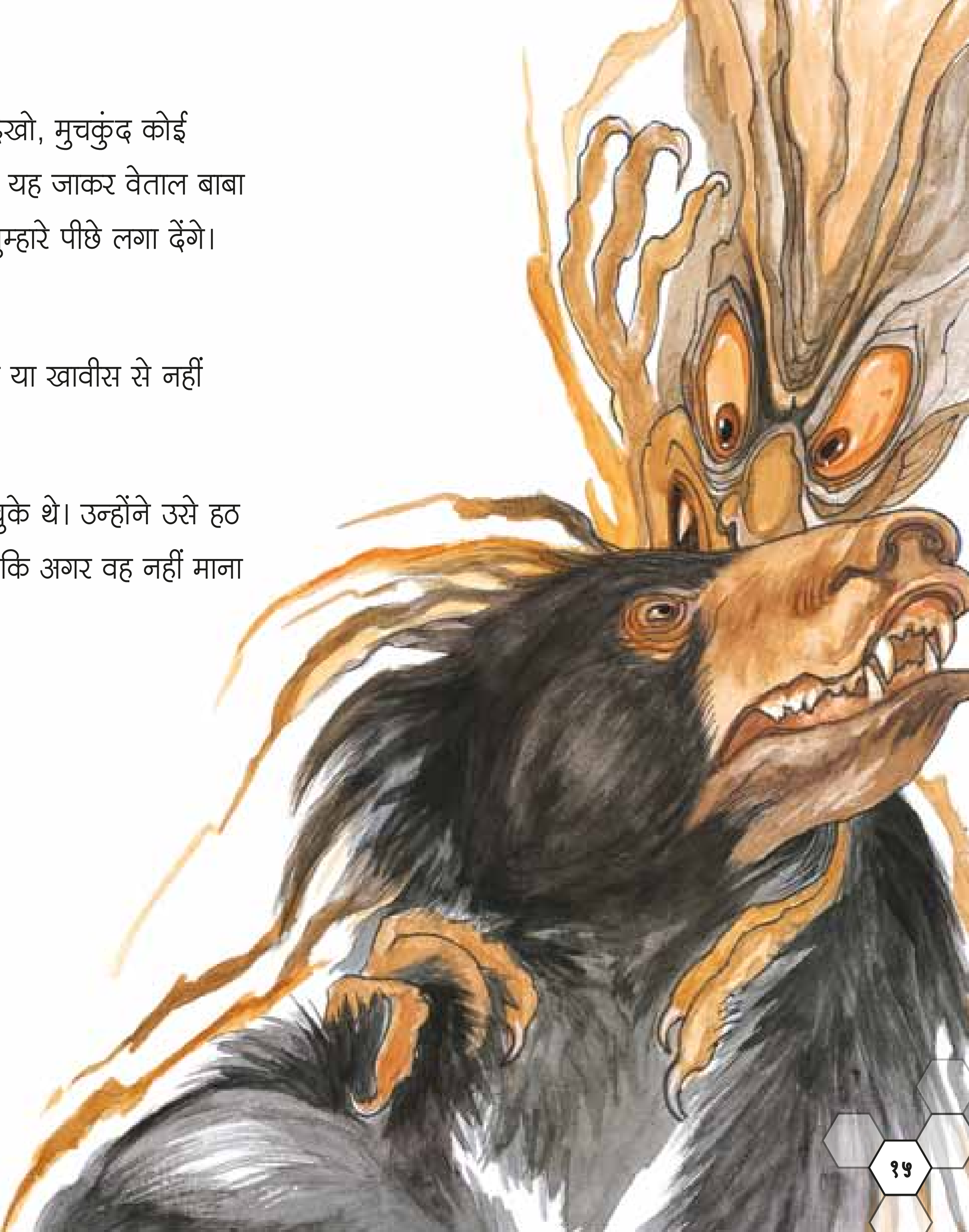

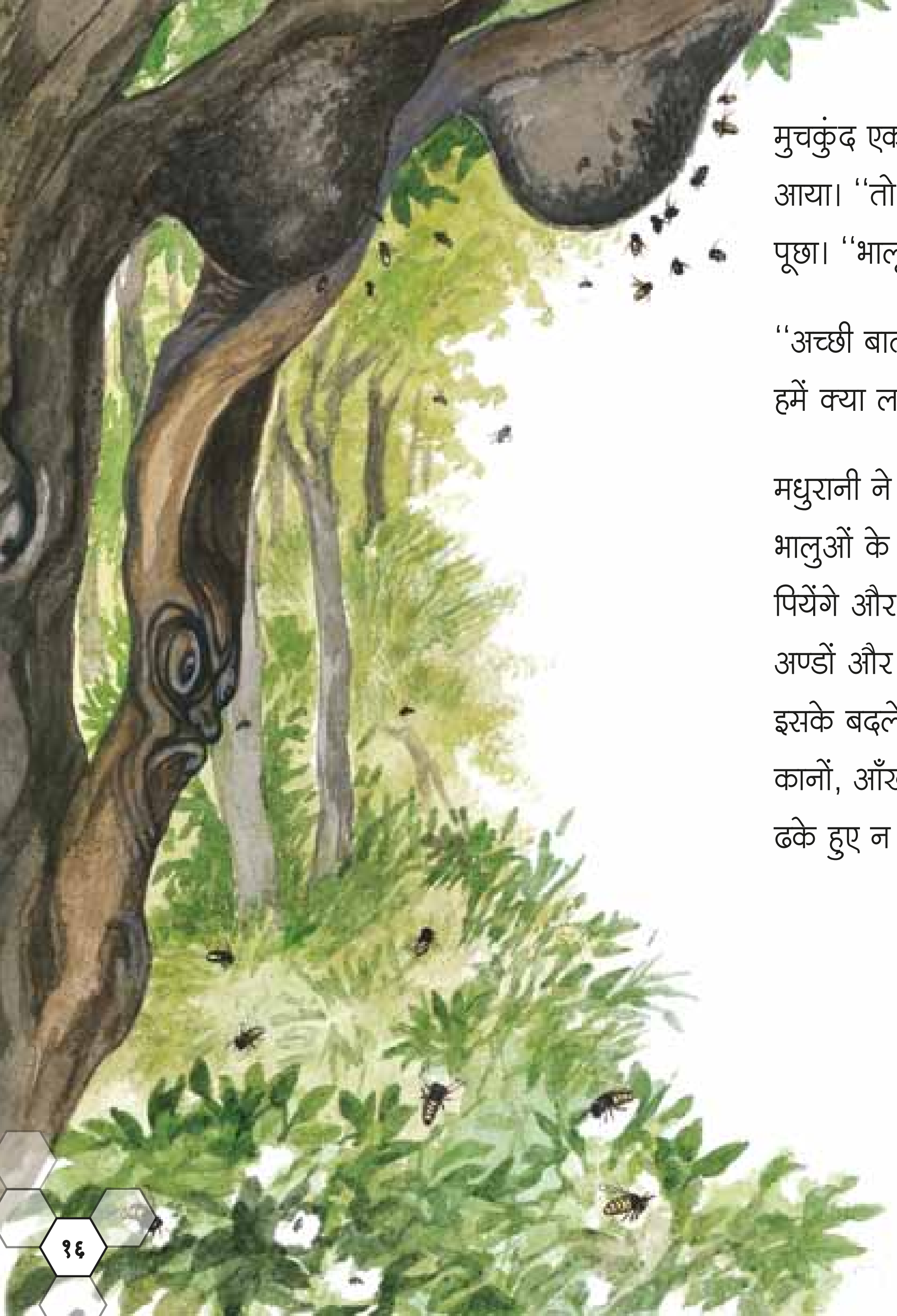

मुचकुंद एक बार फिर नर-मक्खी के रूप में मधुरानी के छत्ते पर आया। ''तो फिर आप मधुमक्खियों ने क्या तय किया है?'' उसने पूछा। ''भालू इस प्रस्ताव पर अमल करने को राज़ी हो गए हैं।''

''अच्छी बात है,' मधुरानी ने कहा। ''देखते हैं कि इस नयी संधि से हमें क्या लाभ मिलता है।''

मधुरानी ने पूरे जंगल में सन्देश भिजवा दिया। ''मधुमक्खियों और भालुओं के बीच शांति समझौता हो गया है। अब से भालू केवल शहद पियेंगे और वह भी महीने में केवल एक बार। वे किसी भी छत्ते से अण्डों और लार्वा को नहीं खायेंगे। वे कोई भी छत्ता नष्ट नहीं करेंगे। इसके बदले में मधुमक्खियाँ भालुओं पर हमला नहीं करेंगी। वे उनके कानों, आँखों और नाक को डंक नहीं मारेंगी, तब भी नहीं जब ये ढके हुए न हों।''

इस प्रकार नयी व्यवस्था लागू हो गयी। भालू छत्तों तक बिना डर के पहुँचते और मधुमक्खियाँ भी अपनी जान गँवाने वाले हमले न करके खुश थीं। वे खुश थीं कि थोड़ा शहद खोकर उनके छत्ते बच जाते हैं। वाली ने भी कोई गलत हरकत नहीं की। मेंढा लेखा के जंगल में शांति छा गयी। मुचकुंद बड़ा खुश हुआ और उसे लगा कि इस बार दीपावली की छुट्टियाँ वास्तव में बड़ी मज़ेदार और प्रभावी रहीं। वह प्रसन्न मन से पुणे लौट गया।

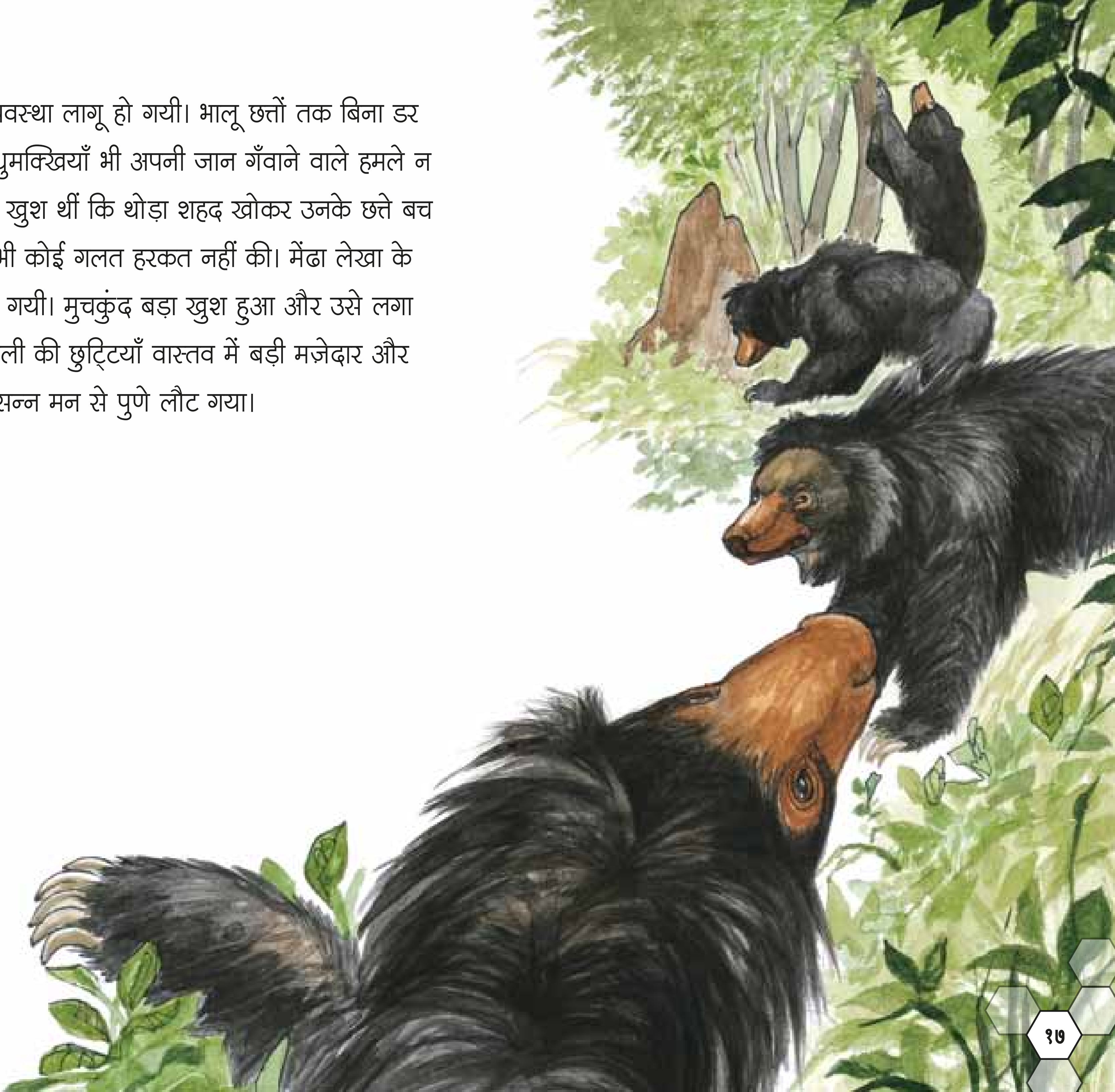

कुछ महीने यूँ ही मस्ती में बीत गए और होली का त्योहार आ गया। इस बीच छत्ते बहुत बड़े-बड़े हो चुके थे। वाली ने होली के दिन अपनी पसंदीदा ठंडाई पी। परन्तु उसे मधुमक्खियों की संधि से पहले की हुल्लड़बाज़ी याद आने लगी 'कम से कम होली जैसे त्योहार के दिन तो सभी बातें भूल कर जीवन का आनंद लेना चाहिए। पुराने अंदाज़ में मधुमक्खियों के अण्डों और लार्वा का स्वाद चखना ही चाहिए,' उसने सोचा।

वाली को एक बड़ा सा छत्ता दिखा। यह वही मधुरानी वाला छत्ता था। वह उस ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। सभी मक्खियाँ पूर्णिमा की चाँदनी रात में रस और रेणुओं की खोज में लगी हुई थीं। किसी ने वाली को देखा ही नहीं। एक ज़ोरदार वार से वाली ने पूरा छत्ता गिरा दिया। उसने पेड़ से उतर कर छत्ते के अण्डों और लार्वा वाले भाग से एक बड़ा टुकड़ा काट खाया। फिर बाहों से अपना मुँह ढक कर मीठी सी नींद सो गया।

इस प्रकार के विश्वासघात से गुस्से में आई मधुरानी ने सेना को आदेश दिया, ''सीधे जाम्बवन के ठिकाने पर जाओ और नील, अंगद और सुशेन को अपना निशाना बनाओ। उनके मुँह डंक मार-मार कर सुजा दो!''

युवा भालुओं की टोली होली की मस्ती में खेल रही थी और अचानक ही उनकी आँखें और नाक हमले की चपेट में आ गए! वे चीखे और चिल्लाये, ''मधुमक्खियों ने बिना कारण हम पर धावा बोल दिया है!''

जाम्बवन चिल्लाया, ''यदि मधुमक्खियों ने होली के दिन हमला बोल ही दिया है तो फिर हम भी अपनी पीठ नहीं दिखायेंगे।'' वे सभी मधुरानी के छत्ते तक पहुँचे पर वह तो ज़मीन पर टुकड़ों में बिखरा हुआ पड़ा था। और पास ही में वाली खर्राटे लेता हुआ सो रहा था।

जाम्बवन को स्थिति समझते देर न लगी, ''तो यह है इस की जड़! हमें इसे ऐसा सबक सिखाना चाहिए कि यह कभी भी भूल न पाए। मधुमक्खियों के साथ हमारी संधि में यह कहा गया है कि खुले हुए होने के बाद भी वे हमारे नाक, कान और आँखों पर हमला नहीं करेंगी। हम उनसे इस शर्त को जारी रखने को कहेंगे पर इसके बाद वे भी अपना बदला इस विश्वासघाती वाली से ले सकती हैं! यह जल्दी जागेगा नहीं। जाओ, जाकर होलिका की आग से कुछ सुलगती लकड़ियाँ ले आओ। इस दुष्ट की कूल्हे और पिछली टाँगों के बाल जला देते हैं और फिर मधुमक्खियों को इस पर हमले के लिए बुला लेंगे! वह अपना मुँह तो ढक लेगा पर कूल्हे के भाग को नहीं बचा पायेगा और यह सबक वह कभी नहीं भूलेगा।''

शीघ्र ही वे आग में से कुछ जलती हुई लकड़ियाँ ले आये और वाली के कूल्हे और टाँगों के बाल जला डाले। वाली ठंडाई, अण्डों और लार्वा के नशे में तब भी सो रहा था।

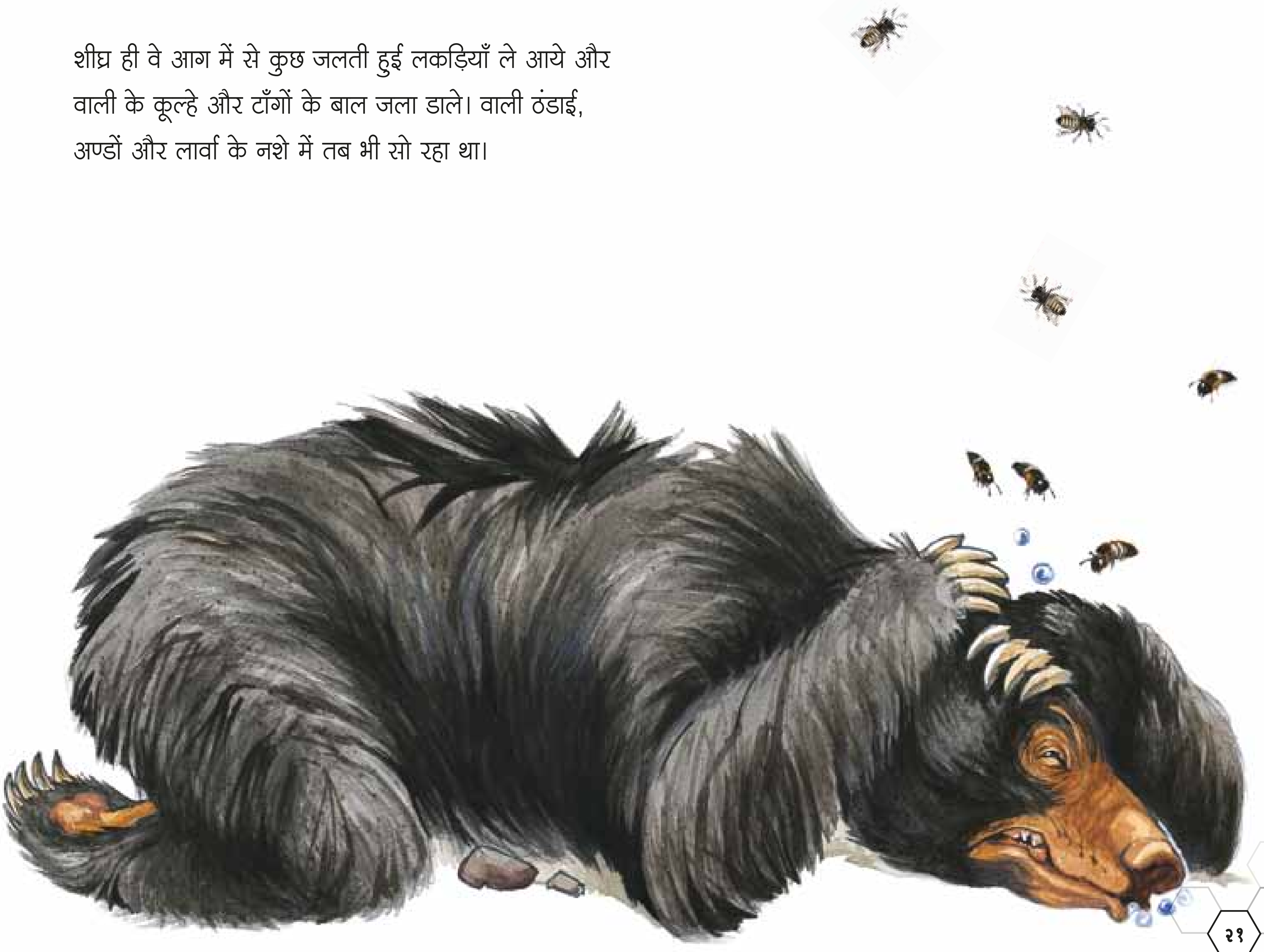

तब जाम्बवन ने वेताल बाबा का ध्यान लगाया, 'ओ वेताल बाबा! हम मुसीबत में हैं, कृपया मुचकुंद को हमारी सहायता के लिए तुरंत यहाँ भेज दीजिये।'

मुचकुंद वेताल अड्डे पर मस्ती में होली मना रहा था और उसे तभी-तभी एड्जर जंगल जाने का आदेश मिला। वह बिना देरी के, एक ही छलाँग में वहाँ पहुँच गया। जाम्बवन चाचा के ठिकाने पहुँचते ही उसने नील, अंगद और सुशेन को सूजे हुए चेहरे लिये दर्द से कराहते हुए पाया। ''यह क्या हो गया?'' उसने पूछा।

जाम्बवन ने उसे बैठा कर पूरी कहानी सुनाई। ''आपने बहुत अच्छा किया। अब मुझे मधुरानी को खोज कर उन्हें समझाना होगा,'' मुचकुंद ने सुन कर कहा।

उसने फिर से एक नर-मक्खी का रूप धारण किया और मधुरानी की खोज में जुट गया। वह उसे एक ऊँचे अर्जुन के पेड़ पर बैठी हुई मिली। उसकी सेना ने उसे घेर रखा था और वे एक नया छत्ता बनाने की तैयारी में थे।

मुचकुंद को देखते ही वह गुस्से से उबल पड़ी, ''तुम जैसों की बातें सुन कर हम बर्बाद हो गए हैं। इससे पहले कि हम तुम्हें डंक मार-मार कर घायल कर दें, तुम यहाँ से तुरंत नौ दो ग्यारह हो जाओ।''

मुचकुंद ने कहा, ''महारानी साहिबा कृपया मेरी बात सुन लीजिये। हर तालाब में एक न एक गन्दी मछली होती है। पर हम उससे बड़ी कड़ाई से पेश आये हैं। हम अपनी संधि जारी रखते हैं। संधि में भालुओं के कूल्हों और पिछली टाँगों को काटने के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। हम भालुओं में केवल एक विश्वासघाती है और हमने उसके कूल्हे और पिछली टाँगों के बाल जला दिए हैं। जैसे ही वह आपको दिखे, भरपूर हमला कीजिये। उसे एक भी बूँद शहद न पीने दें।''

''अगर ऐसा है तो मैं बाकी रानियों को भी खबर कर देती हूँ। पर ध्यान रहे कि ऐसा दोबारा न होने पाए,'' मधुरानी ने कहा।

दिन के उगने से पहले ही जंगल के सभी छत्तों में वाली की दुष्टता और उसकी सज़ा की चर्चा पहुँच चुकी थी। वाली सूर्य की पहली किरण के स्पर्श से जागा। उसके मुँह में पिछली रात के अण्डों और लार्वा का स्वाद तब भी था। 'क्या मज़ेदार होली मनाई मैंने!' उसने सोचा। 'अब मैं कोई नियम नहीं मानूँगा और अपने पुराने तरीके पर ही चलूँगा।' उसने अंगड़ाई लेते हुए नाश्ते में शहद पीना तय किया और उसे ढूँढने निकल पड़ा। वह एक सिमल के पेड़ के नीचे पहुँचा जिस पर से पंद्रह या सोलह छत्ते लटक रहे थे। वह ख़ुशी से चीखा और पेड़ पर चढ़ने लगा। छत्ते के पहरेदारों ने उसे देख लिया।

“तो यह है वह दुष्ट,” मधुमक्खियाँ चिल्लायीं और वाली पर टूट पड़ीं। वाली ने तुरंत बाँहों से अपना मुँह ढक लिया और ज़मीन पर पहले की तरह गोल होकर लेट गया। परन्तु, उसका कूल्हा मक्खियों की चपेट में आ गया! ज्यों ही स्वाभाविक रूप से उसने अपनी बाँहों से कूल्हे को ढकने की कोशिश की, मक्खियों ने उसके कान, नाक और आँखें काट खाईं। दर्द से चीखता, चिल्लाता वाली पास की एक छोटी नदी में कूद पड़ा। कूल्हे पर जब उसे पानी की ठंडक का अनुभव हुआ तब उसे पता चला कि उसके कूल्हे और पिछली टाँगों के बाल अब नहीं रहे थे।

उसे वहाँ पड़े हुए यह भी एहसास हो गया कि अब मधुमक्खियों के अंडे और लार्वा चखना उसके बस की बात नहीं थे। वह शहद का सपना भी नहीं ले सकता था।

इस घटना के बाद कई बार जंगली मधुमक्खियों और भालुओं के बीच वार्ताएँ हुईं। दोनों पक्षों ने माना कि इस पुरानी संधि को जारी रखा जाए और वाली को इससे बाहर रखा जाए। वाली को अब शहद पीने की भी इजाज़त नहीं थी। मुचकुंद फिर से सप्ताह भर मेंढा लेखा में रुका रहा। एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। क्या मधुमक्खियों की इतनी बड़ी संख्या पनपने के पीछे इस संधि का हाथ था या फिर इंसानों ने भी इस संधि से संयम की सीख ले ली थी? इस बात का पता लगाने के लिए वह एक बुद्धिमान बूढ़े मुखिया, मनीराम काका से जा कर मिला।

मुचकुंद ने पाया कि वर्धा में काम कर रहे वैज्ञानिकों ने छत्तों से शहद निकालने की एक ऐसी तकनीक निकाली है जिसमें छत्तों को नष्ट नहीं करना पड़ता। मेंढा लेखा के गाँववाले इस तकनीक का इस्तेमाल करने लगे हैं! इसके अलावा उन्होंने जैविक खेती करना भी शुरू कर दिया था और अब मधुमक्खियों को ज़हरीले कीटनाशकों का खतरा भी कम था। इससे जंगल मधुमक्खियों और अन्य जीवों से भरा-पूरा होने लगा!

बिना हानि के शहद निकालना

सेवाग्राम की प्राकृतिक तकनीक के अनुसार छत्तों से शहद निकालने के लिए किसी तेज़ धारदार औज़ार का प्रयोग करना चाहिए ताकि उन कोषों को सफाई से काटा जा सके जिनमें गाढ़ा शहद जमा होता है। इस तरह छत्ते के कोषों को और उनके दोनों ओर के स्तंभों को नुकसान नहीं पहुँचता। जल्दी ही मधुमक्खियाँ काटे गए उस भाग को भर कर फिर से शहद जमा करने में जुट जाती हैं। एक-दो महीने में इस शहद को भी निकाला जा सकता है। इस तरह मधुमक्खियाँ जीवित बच जाती हैं और बड़ी मात्रा में शहद भी एकत्रित किया जा सकता है। पारंपरिक तरीके से यह तरीका अच्छा है क्योंकि इसमें मक्खियों को धुँए से मारा नहीं जाता। इस प्रकार से किसी भी जंगल क्षेत्र से शहद का उत्पादन काफी बढ़ सकता है। हाँ, यह बात है कि शहद को इस तकनीक से निकालने के लिए विशेष प्रकार के कपड़ों, मुखौटों, रस्सी वाली सीढ़ियों और टॉर्च की ज़रूरत पड़ती है और केवल अँधेरी रातों में ही शहद निकाला जा सकता है।

हमारी मधुमक्खियाँ

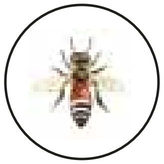

वैज्ञानिक नाम	एपिस फ्लोरे	एपिस सिराना	एपिस मेलिफेरा	एपिस डोरसाटा
अंग्रेज़ी नाम	ड्वार्फ बी	सतपुड़ा बी	इटालियन बी	रॉक बी
भौगोलिक क्षेत्र	१५०० मीटर ऊँचाई तक के ऊष्णकटिबंधीय मैदान या निचले क्षेत्र	३००० मीटर ऊँचाई तक के उष्ण मैदान	यूरोप, अमरीका, ऑस्ट्रेलिया के उष्ण क्षेत्र, अब भारत में भी पाली जाती हैं	४००० मीटर ऊँचाई तक के उष्ण और कटिबंधीय मैदान और जंगल
भारत में कहाँ मिलती हैं	प्रत्येक मैदानी क्षेत्र में	हर जगह	उत्तर भारत में पाली जाती हैं	हर जगह
छत्तों के निर्माण के प्राकृतिक स्थान	झाड़ियाँ, पेड़, पत्तों से ढकी जगहें और दीवारों की दरारें	चट्टानें, दीवारें और पेड़ों के तनों के खोखले भाग	चट्टानों और दीवारों की दरारें और पेड़ों के तनों के खोखले भाग	बड़े पेड़ों की शाखाएँ, चट्टानें, भवन, मचान और पुलों के नीचे
छत्ते किस प्रकार के स्थानों में पाए जाते हैं	खुले में	अँधेरी जगहों में	अँधेरी जगहों में	खुले में
मक्खियों का पालन	संभव नहीं है	संभव है	संभव है	संभव नहीं है

Read India

प्रथम बुक्स २००४ में 'रीड इंडिया' अभियान के अन्तर्गत स्थापित हुई।
'रीड इंडिया' बच्चों में पठन को बढ़ावा देने का देशव्यापी कार्यक्रम है।
प्रथम बुक्स एक ग़ैर-मुनाफ़ा संस्था है जो अनेक भारतीय भाषाओं
में बच्चों के लिये उच्च कोटि की पुस्तकें प्रकाशित करती है।
हमारा ध्येय है 'हर बच्चे के हाथ किताब' पहुँचाना और हम इसके द्वारा
देश भर में बच्चों को किताबों व पठन का आनन्द देना चाहते हैं।
यदि आप इसमें किसी भी तरह से योगदान देना चाहते हैं तो हमें
info@prathambooks.org पर ई-मेल भेजें।

माधव गाडगिल एक फ़ील्ड ईकोलॉजिस्ट यानि पारिस्थितिकी वैज्ञानिक हैं जिन्हें भारत के पहाड़ों, जंगलों और यहाँ के प्राणियों, वनस्पति और लोगों से बहुत प्रेम है। पुणे और अमरीका में हार्वर्ड में पढ़ाई के बाद वे कई वर्षों तक बंगलूरू के भारतीय विज्ञान संस्थान में पढ़ाते रहे हैं। शोध पत्रों और पुस्तकों के साथ-साथ उन्होंने बच्चों के लिए 'हिन्दू' समाचार पत्र में एक पाक्षिक स्तम्भ भी लिखा है। उन्हें हार्वर्ड विश्वविद्यालय के सेंटेनियल पदक, वोल्वो पर्यावरण पुरस्कार और पद्म भूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

माया रामास्वामी को किसी भी जीव और उसके नैसर्गिक वातावरण को चित्रों से जीवंत बना देने का कौशल प्राप्त है। वह अपनी छवियों को एक गति प्रदान करती हैं। उनका काम बड़ों और छोटों, दोनों के लिए लिखी गयी कई वन्य जीवन की पुस्तकों में देखने को मिलता है। माया ने, जो स्वयं एक वन्य जीव प्रेमी भी हैं, 'कछुआ' और 'नोनो, द स्नो लेपर्ड' जैसी कई पुस्तकों का चित्रांकन किया है।

मधुमक्खियाँ, भालू और फूल हमारे प्राकृतिक संसार के निर्माण के तीन अभिन्न अंग हैं। भारत में पाई जाने वाली जंगली मधुमक्खियाँ दुनिया की सबसे बड़ी मधुमक्खियों में से एक हैं और केवल यही चाँदनी रातों में बाहर निकलती हैं। वैज्ञानिक स्थानीय लोगों के साथ मिल कर इस अमूल्य प्राकृतिक सम्पदा को बचाए रखने की कोशिशें कर रहे हैं। पढ़िये मुचकुंद और उसकी टोली और इन मधुमक्खियों के बीच एक अनोखी संधि की कहानी। इसमें कई नाटकीय मोड़ हैं और हमारी प्राकृतिक सम्पदा की दिलचस्प जानकारी भी।

स्तरवार पढ़ना सीखें। पठन स्तर ४ की पुस्तक।

पढ़ने की शुरुआत/ सस्वर पठन
बहुत छोटे बच्चों के लिये जो पढ़ना चाहते हैं और कहानियाँ सुनने को उत्सुक हैं
१

पढ़ना सीखने वाले
उन बच्चों के लिये जो सरल शब्द पहचानते हैं और मदद के साथ नये शब्द पढ सकते हैं
२

३
अपने आप पढ़ने वाले
उन बच्चों के लिये जो खुद पढ़ने को तैयार हैं

प्रवीण पाठक
बड़े बच्चों के लिये जो पढ़ने में प्रवीण हैं
४

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स एक ग़ैर-मुनाफ़ा संस्था है जो बच्चों की पढ़ने में रुचि बढ़ाने के लिये अनेक भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

www.prathambooks.org

Muchkund and his Sweet Tooth (Hindi)
MRP: ₹ 55.00

ISBN 978-81-8479-413-7
9 788184 794137